International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.4 Mar – Apr 2023

'धारा के विरुद्ध' कवितासंग्रह में स्वतंत्रता की आवाज़

डॉ. गोरख निळोबा बनसोडे
सहयोगी प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, सरदार बाबासाहेब माने महाविद्यालय, रहिमतपुर तह. कोरेगांव जिला. सातारा महाराष्ट्र
***Corresponding Author* - डॉ. गोरख निळोबा बनसोडे**
Email: gorakhbansode1971@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.13340714

सारांश :

'धारा के विरुद्ध' इस कविता संग्रह के कवि डॉ. कुसुम वियोगी जी हैं। इन्होने जनवरी, 2023 में प्रस्तुत कविता संग्रह अक्षर पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रिब्युटर्स, दिल्ली, से प्रकाशित किया हैं। 'धारा के विरुद्ध' कविता संग्रह में कुल 75 कविताएं हैं। इसमें सभी कविताएं दीन-दलित वर्ग के जन जीवन से प्रभावित हैं।

'धारा के विरुद्ध' यह कविता संग्रह' कवि ने समर्पित करते हुए कहा है, "उन सामाजिक न्याय एवं परिवर्तन के पक्षधर क्रांति-चेताओं को, जो आज भी अपने हाथों में मशाल थामे आगे बढ़ रहे हैं..."अर्थात कवि ने यह कविता संग्रह दीन-दलित वर्ग के लिए आंदोलक बनकर न्याय देने का लगातार कार्य कर रहे उन सभी कार्यकर्ताओ को समर्पित किया है। इससे यह जाहिर होता है की भारतीय संविधान का निर्माण मूलत: इस देश के दीन-दलित, पीड़ित वर्ग के हित में हुआ पर सदियों से अन्याय-अत्याचार सहने के उपरांत देश के आज़ादी के अमृत महोत्सव के बाद भी देश के उपेक्षित वर्ग को न्याय नहीं मिल रहा है। इसलिए न्याय हेतु यह क्रांति की मशाल हाथ में लेकर चेतना देकर आगे चलनेवाला कार्यकर्ता चाहिए। तभी यह आंदोलन जीवित रहेगा और न्याय मांगने की प्रक्रिया जारी रहेगी।

कवि ने अपनी कोई भूमिका न देते हुए सांकेतिक रूप में एक कविता में कहा है, "अतीत से / सबक ले / वर्तमान से / संघर्ष कर / कल, की / रोशनी के लिए / हमने / अंधेरों से / मुठभेड़ की है।" जितने के लिए पूर्वजों के पास कुछ भी साधन नहीं था। आज आपके पास बुद्धि और शक्ति दोनों साधन उपलब्ध है। इसके साथ कवि ने पाठक वर्ग में चेतना जगाने के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का संदेश दिया है, "तुम्हारे विरोधी तुम्हे मिट्टी में मिलाने का हर संभव प्रयत्न करेंगे, परंतु! स्वस्थ बीज की तरह अंकुरित होकर तुम्हे, एक विशाल पेड़ बनना होगा।" अर्थात यहा कवि की बुद्धिमत्ता का भी परिचय मिलता है की कवि हमें जागृत होकर विरोधियों के रणनीति से परिचित होने की बात करते है।

स्वतंत्रता, समता, स्वाभिमान एवं परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति :'धारा के विरुद्ध' इस शीर्षक से जी. एल. एस. कॉलेज फॉर गर्ल्स, अहमदाबाद गुजरात के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. धीरज वणकर जी ने प्रस्तुत कविता संग्रह को प्रस्तावना लिखी हैं। इसमें वे कहते हैं, " 'धारा के विरुद्ध' संग्रह की कविताओं में पीड़ा का दर्द है, साथ ही इस स्थिति से इनकर का हुंकार भी है। ये केवल अपने दर्द की बात नहीं करते, बल्कि सम्पूर्ण दलित, उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, अछूत और पिछड़े वर्ग की वेदना की बात करते है।" इससे स्पष्ट होता है की समस्त भारतीय दीन-दलित वर्ग की पीड़ा को कवि ने मानवीय संवेदना से प्रस्तुत किया हैं।

बीज शब्द - धारा, आक्रोश, उत्पीड़न, अपमान, शिक्षा, लोकतंत्र, अधिकार, संघर्ष, कलम, व्यवस्था, समानता,, परिवर्तन, बेरोजगारी, परिवर्तन, क्रांति, कानून, परंपरा, स्वतंत्रता, राजनीति, आंदोलन, गुलामगिरी, निराशा, आदी।

प्रस्तावना:

सैकड़ो सालों से भारतीय दीन-दलित वर्ग को जाति-धर्म के आधार पर निम्न, कनिष्ठ कहा गया। ऐसी अवैज्ञानिक तथा गैर मान्यता से इस वर्ग का शोषण होता रहा। 15 अगस्त 1947 को हमारा भारत देश आज़ाद हुआ। 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र हुआ। इस तिथि से कानूनन

भारतीय सभी लोग समान हो गये । सभी नागरिकों की समान सत्ता प्रस्थापित हो गईं । अब कोई श्रेष्ठ-कनिष्ठ न रहकर सभी बराबर हो गए।

भारत देश गणतंत्र हो जाने से देश सभी का हो गया । सभी नागरिकों को समान स्वातंत्र, समता, बंधुता, न्याय प्राप्त हुआ। लोग प्रगत तथा विकसित होने के लिए भारतीय संविधान में कानूनन 395 धाराएं और 8 अनुसूचियां बनाकर समान अधिकार प्राप्त हुए। धर्म, वंश, जात, लिंग, या जन्मस्थान के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता है । कानूनन अस्पृश्यता नष्ट की गईं है । सभी को कही भी रहने का, शिक्षा लेने का, व्यवसाय करने का आदि अधिकार प्राप्त हुए।

आज भारतीय संविधान लागू होने के 75 साल बाद वर्तमान काल में देश के दीन-दलित वर्ग की स्थिति देखी जाए तो उनकी प्रगती में जादा अंतर नहीं आया है। इस वर्ग के हित में जिस सक्ति से कानून व्यवस्था चलाना आवश्यक था उस तरह चलाया नही। परिणामत: दलित वर्ग पर जो अन्याय-अत्याचार हो रहे थे वे कमअधिक मात्रा में भी क्यों न हो आज भी कायम है । भारतीय समाज में धर्म, वंश, जात, लिंग व्यवस्था का बोलबाला है।

कवि डॉ. कुसुम वियोगी का जीवन परिचय :

डॉ.कुसुम वियोगी जी का जन्म 9 अक्टूबर, 1955 ई. को उत्तर प्रदेश के जिला महामायानगर के हाथरस गांव में सामान्य परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम रामगोपाल और माता का नाम हिरादेवी था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा हाथरस में हुई और उच्च शिक्षा दिल्ली में पूर्ण हुई। उन्होंने एम.ए., एल. एल. बी., डी. ओ. एम. एच., जर्नलिस्ट की शिक्षा प्राप्त की। दिल्ली के कैनरा बैंक में मैनेजर पद पर कार्यरत हुए । इन्होंने सन 1989 ई. 'बौद्ध आंदोलन से अनुप्राणित लोकसहित्य' इस विषय पर पीएच. डी. की। उनका पूरा नाम डॉ. कमलेशकुमार श्रीरामगोपाल कुसुम है। लेकिन साहित्यिक जगत में डॉ. कुसुम वियोगी इसी उपनाम से वे सुपरिचित है। अब केनरा बैंक से वरिष्ठ अधिकारी इस पद से सेवानिवृत्त होकर स्वतंत्र लेखन में जुडे है।

साहित्यिक लेखन:

बिम्ब से प्रतिबिम्ब तक, उत्थान के स्वर, उठ रे! बंधुआ, व्यवस्था के विषधर, टुकड़े-टुकड़े दंश, लालबत्ती, अंधेरा चीरती रोशनी, धारा के विरुद्ध डॉ. .कुसुम वियोगी की चुनिंदा (कवितासंग्रह) शब्द और श्रृंगार (गीत-संग्रह) चार इंच की कलम, (कथा-संग्रह) चर्चित दलित कहानियां, दलित महिला कथाकारों की चर्चित कहानियां,बीसवीं सदी की दलित कहानियां, समकालीन दलित कहानियां, 21वीं सदी की इक्कीस कहानियां (संपादित कथा-संग्रह) डा.आंबेडकर के क्रांतिकारी भाषण,आंबेडकर ने कहा था, बौद्ध संस्कार कैसे करें, संघ और बाबासाहेब डॉ.आंबेडकर (शीघ्र प्रकाश्य) (गद्य साहित्य) दलित क्रांतिवीर, दलित क्रांतिकारी विरांगनाएं, बाल किशोर गीत, डा. आंबेडकर गीत माला (बाल साहित्य) आदि प्रकाशित कृतियां है।

संघ और डॉ. आंबेडकर, It's no Longer in Democracy (Poetry collection Book, प्रेमचंद रचनावली 20 खण्ड के संपादन सलाहकार मंडल के सदस्य, आधुनिक बौद्ध आन्दोलन से अनुप्राणित लोक साहित्य विषय पर (शोध) अनेक पत्र व पत्रिकाओ का संपादन, अनेक राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकओं मे प्रकाशित रचनायें व शोध आलेख प्रकाशित ! (अन्य) आदि अप्रकाशित रचनाएं है। जो भविष्य में जल्दी ही प्रकाशित होगी।

सम्मान एवं पुरस्कार :

हाशिए की आवाज़ कथा सम्मान-2020

भारतीय सामाजिक संस्थान नई दिल्ली से सम्मानित कथाकार, अनेक साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित, समाज एवं साहित्य सेवा हेतु दो बार नागरिक अभिनन्दन, अखिल भारतीय मंचो से निरंतर काव्य- पाठ, मंचिय कवि/गीतकार,कथाकार एवं समालोचक तथा सामाजिक न्याय एवं परिवर्तन के पक्षधर प्रवक्ता,

आप हिंदी अकादमी (दिल्ली) कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग दिल्ली सरकार के पूर्व सदस्य रहे है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालय मे शोध-पत्र वाचन, देश व विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों मे कविता और कहानियां दलित साहित्य पाठयक्रमों में पढ़ाई जाती हैं, अनेक भारतीय व विदेशी भाषाओं में कविता कहानियों का अनुवाद, विभिन्न विश्वविद्यालयों के सेमिनार में सहभाग, सन् 2001 मे अंतरराष्ट्रीय दलित साहित्य सम्मेलन का चंडीगढ मे दो दिवसीय आयोजन के मुख्य संयोजक (ड़ा. आंबेडकर स्टडी सर्कल) चंडीगढ सामाजिक दलित एवं बौद्ध आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी तथा समाजोत्थान हेतु सदैव प्रयासरत,

अनेक साहित्यिक / सामाजिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय जुडाव, दलित लेखक संघ के संस्थापक सदस्य, वर्तमान मे भारतीय दलित साहित्य मंच पंजीकृत (दिल्ली) के अध्यक्ष, श्रमण साहित्य एवं संस्कृति मंच के संस्थापक अध्यक्ष, मानवतावादी विचारधारा से ओतप्रोत साहित्यिक लेखन, आकाशवाणी व दूरदर्शन से अनेक बार काव्य -पाठ, देश की एकता एवं अखण्डता में अटूट विश्वास, आंबेड़कर, बुध्द एवं कबीर की विचारधारा से प्रभावित होकर, मानवतावादी लेखन व भारतीय संविधान मे पूर्ण आस्था व विश्वास का साहित्य लेखन।

कविता संग्रह 'धारा के विरुद्ध' का अनुशीलन :

भारतीय समाज में भारतीय संविधान के धारा के विरुद्ध सभी व्यवस्था किस तरह चल रही है इसका स्वयं का उदाहरण देते हुए 'धारा के विरुद्ध' कवितासंग्रह की पहली 'स्व-कथन' इस कविता में कवि डॉ. कुसुम वियोगी कहते है -

"मेरी कविताएं ही मेरी आत्मकथा है,
जिनमे जोश है, होश है और आक्रोश भी
जातीय जड़ता के विरुद्ध संघर्ष भी।"1

अर्थात कवि ने जितनी सारी कविताएं लिखी है उनमें दीन-दलित वर्ग पर जाति के कारण हो रहे अन्याय-अत्याचार की बातें ही बताई है। मतलब यह की भारतीय संविधान जिस अच्छे उद्देश्य से लिखा है, मात्र उस तरह चलता नही है। परिणामत: दीन-दलित वर्ग को न्याय नही मिल रहा है।
दीन-दलित वर्ग के छात्रों के साथ उच्च वर्ग के प्रत्यक्ष अध्यापक स्कूल में किस तरह सुलूक करते है, इसका उदाहरण देते हुए 'पानी और प्यास' कविता में कवि कहते है -

"आजादी का 75 वा अमृतमहोत्सव ! या, फिर दलित
अस्पृश्यो का मृत महोत्सव कलम पर पाबंदी अभिव्यक्ति की
स्वतंत्रता पर अघोषित प्रतिबंध!
पानी और प्यास की यह कैसी दुरी? जी, करता है कलम
तोड़ दूँ मटके की जगह जहरीली, मानसिकता से भरे मास्टर
का ही सिर फोड़ दूँ "2

20 जुलाई 2022 के दिन राजस्थान के जालोर के सराणा इस गांव के एक प्राथमिक स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ रहे इंद्रकुमार मेघवाल इस लडके ने प्यास लगने पर सार्वजनिक मटके से पानी पिया ल यह देखकर उच्च वर्गीय अध्यापक ने उसे लात-घूंसों से इतनी बेरहमी से मारा की उस लडके की इलाज के दरम्यान सिविल अस्पताल में मृत्यु हुई।

"भारतीय संविधान की धारा 17 के अनुसार देश से अस्पृश्यता नष्ट की है। अस्पृश्यता मानना कानूनन अपराध है। "3

लेकिन भारत देश में आज़ादी के 70 साल बाद भी दलित वर्ग पर हो रहे अन्याय-अत्याचार दूर नही हुए। व्यवस्था जैसी की वैसी ही रही है।

दलित वर्ग पर हो रहे अत्याचारों में कमी नही आ रही है। 'शब्द और संघर्ष' कविता में कवि कहते है,

"हमारे पुरखों की हथेलियों पर पड़ी गांठे
चेहरों की अनगिनत झुर्रियां दर्शाती है
उनकी अनकही अनवरत संघर्ष गाथा!"'4

शोषण का तरीका बदला है। सौ वर्ष पूर्व जो शोषण दलित वर्ग का हो रहा था। वही स्थिति आज भी है।

पढ़े लिखें वर्ग को बेरोजगार बनाया जा रहा है। निजीकरण के कारण उनकी शासकीय नौकरिया भी कम हुई है।
'हक की बात' कविता में कवि कहते है,

"शिक्षित बेरोजगार नौकरी की मांग को
शहर-शहर आंदोलित है निजीकरण के विरुद्ध
सब एकमत है तुम, कब तक बहरे बने रहोगे
कब सुनोगे आम आदमी के हक की बात ? "5

आज शिक्षित दलित युवा वर्ग नौकरी की तलाश में है। डॉ. दिलीपकुमार कसबे कहते है, "संविधान ही दलितों का एक मात्र सहारा है किन्तु बहुमण्डलीकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण के दौर में आजकल दलितों के आरक्षण के विरोध में सवर्णो द्वारा षड़यंत्र रचे जाने लगे है।"6 शासन उनका आरक्षण काटकर उन्हें बेरोजगार बना रहा है। युवा वर्ग एकमत से निजीकरण के विरोध में आंदोलन कर रहे है।

युवा वर्ग के साथ नारी वर्ग का भी देश में शोषण हो रहा है। 'औरत ही क्यों?' कविता में कवि कहते है -

"सूट में साड़ी, सलवार में कुर्ती पायजामा में
जींस, टॉप स्कर्ट में सांध्वी के चोले में
भिक्षुणी के चीवर में दानवी दरिंदो को

औरत ही क्यों दिखती है
माँ -बहन बेटी क्यों नहीं दिखती !"7

सदियोंसे नारी मनुष्य कम और वस्तु ही जादा समझा गया है। डॉ. अशोक रायबोले कहते है,"भरतीय समाज में नारी सदियों से शोषित जीवन जी रही है। सामंती शोषण में सर्वहारा समाज की नारी को अक्सर अपना शिकार बनाया है।"8 नारी का मान सम्मान बढ़ना चाहिए। अपनेपन के नाते रिश्ते में व्यापकता आनी चाहिए।
'खेतिहर मजदूरों की पीड़ा' कविता में कवि कहते है,

"क्या हमारी माँ, बहन बेटियां तुम्हारी, माँ, बहन-बेटियां
नहीं? जवाब दो!" 9

समाज तथा देश की औरत अपनी माँ, बहन, बेटी लगनी चाहिए। मानसिकता में परिवर्तन करना यही नारी की सुरक्षितता का प्रशस्त मार्ग है।
'स्त्री स्वतंत्रता' कविता में कवि कहते है,

" दुनिया तुमसे ही, तो खूबसूरत है तुम ममता की मुरत हो
तुमसे ही, तो सृष्टि है तुम ही तो
भूत, वर्तमान और भविष्य की दृष्टि हो ! "10

नारी यही संसार तथा सृष्टी की निर्मिति का आधार है।

भारत देश खेती प्रधान कहा गया है। किसान सभी का पालनहार है। किसान के श्रम से ही हमें अनाज मिलता है। उसी अनाज से हमारे शरीर का पोषण होता है। उसी अन्नदाता का देश में शोषण हो रहा है। किसान, उसकी पत्नी, बच्चे कडी मेहनत लेकर देश के हर जीव को जीवित रखने का प्रयास करता है।
'काठ-काठी' कविता में कवि कहते है-

"आज़ादी के बाद आज भी जुएं में जुतता है एक बैल के साथ
आदमी बनाम बैल, बैल बनाम औरत i"11

देश का किसान कर्जदार है। कर्ज के बोझ के नीचे दबकर वह मरण यातनाएं झेलता है। कर्ज के कारण शासन उसकी खेती छीनने का प्रयास करती है। इसके खिलाफ किसान आंदोलन करते है। 'डर' कविता में कवि कहते है-

" वे जरूर डरेंगे, अभी अन्न उगाने वाले सड़को पर उतरे है,
जब खाने वाले सड़कों पर उतरेंगे वे, जरूर डरेंगे
सत्ता के सिंहासन से उतरेंगे!" 12

किसान को आंदोलन करने के लिए मजबूर करने वाली सरकार को सिंहासन छोड़ना पड़ता है। इसका इतिहास है। 'आंदोलन के हक में' कविता में कवि कहते है -

"किसान आंदोलन के हक में आखिर तीनों काले कानून वापस
हुए अन्नदाता जीता तुम हारे! "13

देश की राजनीति सकारात्मक की जगह नकारात्मक चल रही है। वे तानाशहा बन रहे है। 'इंसानियत जिंदा है' कविता में कवि कहते है -

"नेताओं के कारनामें पर देश शर्मिंदा है !"14

राजनेता लोग देश के सेवक होते है। लेकिन आज राजनेता वर्ग देश के मालिक बनकर सभी वर्ग पर अपनी हुकूमत दिखा रहा है।
'योजना' कविता में कवि कहते है,

"लोकतंत्र की, समृद्धि को कुर्सियों पर
बैठे गिद्ध दिन-रात बनाते है योजना आखिर,
आदमी को और कहां-कहां से नोचा जा सकता है?"15

वर्तमान काल में देश की राजनीति में बहुत बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की नीति कार्यरत है। योजनाएं कागज पर ही दिखाई देती है। लोग दिनों-दिन दीन-दलित, शोषित, पीड़ित बनते जा रहे है। योजनाओं के कारण लोगों की कही भी प्रगती दिखाई नही दे रही है।

सत्ता प्राप्त करने के लिए आज भारतीय राजनीति में चुनाव के समय समाजसेवक के बजाय अधिक मात्रा में गुंडा लोग दिखाई देते है। 'सब जानते है' कविता में कवि कहते है -

"सब जानते है चुनाव आते ही दंगों की जमीन
पुख्ता होने लगती है ! फिर भी धर्म जाति के
नाम पर हम सब अपनी-अपनी मुट्ठीया ताने
आपस में लड़ पड़ते है आखिर क्यों?"16

चुनाव के समय राजनेता वर्ग आम जनता को जाति-धर्म में विभाजित करते है। हिंदू-मुस्लिम लोगों को एक दूसरे के सामने लढ़-झगड़ने को उकसाते है। ऐसे समय आम लोगो ने अपनी मुट्ठी तानने के बजाय शांति का प्रयोग करने की आवश्यकता है।

राजनेता लोग अच्छे दिन आ रहे ऐसा कहते हुए सभी को गुमराह करते है। 'दुर्दिन' कविता में कवि कहते है -

"तुम्हारे अच्छे दिन की आश में आँख पथरा गईं किसान सड़क पर आ गए, आदिवासी जल जंगल जमीन से बेघर होने लगे, युवा बेरोजगारी का मर्शिया पढ़ने लगे तुम्हारी राजनीति नरभक्षी बाघिन बन चुकी है "17

देश का किसान, आदिवासी, युवा वर्ग और आम आदमी प्रगती का कोई नामों निशान न दिखाई देने से दिशाहीन हो गया है।

'जुर्म' कविता में कवि चेतना देकर जागृत करते है -

"जुर्म छोटा हो या बडा जुर्म तो आखिर जुर्म ही होता है!
परंतु जुल्म को देखकर जितनी बड़ी तुम्हारी खामोशी है
उससे बढ़कर दुनिया में कोई जुर्म नहीं हो सकता!
मूक बधिर मत बनो अन्याय के विरुद्ध बोलना सीखो
प्रतिरोध के स्वर बुलंद करो वरना, तुम्हारी आनेवाली नस्ले
गूंगी बनी रह जाएगी फिर, मत कहना..."18

"जीवो जीवस्य जीवनम" इस सूत्र के अनुसार एक व्यक्ति या एक वर्ग दूसरे वर्ग को खाने पर तुला है । ऐसे समय सावधानी तथा बुद्धिमानी से जीवन जिने की आवश्यकता है । अन्याय के समय प्रतिरोध महत्वपूर्ण है । प्रतिरोध नही करेंगे तो गुलामी तथा अन्याय सहना पड़ेगा।

निष्कर्ष:

डॉ. कुसुम वियोगी जी का धारा के विरुद्ध यह कविता संग्रह हमें भारतीय संविधान की याद दिलाता है। भारतीय संविधान की धाराएं भारतीय नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करते हुए उनका सम्मान बढ़ाती है। धारा के विरुद्ध वर्तन करने वालों के खिलाफ सख्ती से पेश आकर गुनहगार को शासन करती है । इसका कारण यह है की भारतीय संविधान के मूल तत्व स्वातंत्र, समता, बंधुता, न्याय इनका सभी भारतीय लोग रक्षण करें। कोई भी किसी भी नागरिक का ना ही शोषण करें और ना ही किसी को भी जाति-धर्म, लिंग भाव से उच्च-निच, श्रेष्ठ कनिष्ठ ना समझे सभी को समान तथा बराबर का समझे।

'धारा' इस शब्द का अर्थ राजपाल हिंदी शब्दकोश में डॉ. हरदेव बाहरी लिखते है, "लगातार बहनेवाली धार, निरंतर गिरने का क्रम। लेकिन यहा धारा यह शब्द भारतीय संविधान में अनुछेद इस अर्थ में आया है। धारा के विरुद्ध इसका मतलब दो अर्थ में है -

पानी की धारा प्राकृतिक होती है। नदी या सागर की धारा प्राकृतिक है। उसे रोकने का या मोड़ने का कोई भी प्रयास नही कर सकता, और करना भी नही चाहिए। उसी तरह मनुष्य का जीवन प्राकृतिक है । मनुष्य को धर्म, जाति में बाँटना तथा श्रेष्ठ-कनिष्ठ, उच्च-नीच मानना अप्राकृतिक है । उसी तरह भारतीय संविधान की धाराएं भारत देश तथा लोगों की प्रगती के लिए है। धाराओं को न मानना, उनका गलत अर्थ जोड़ना यह धारा के विरुद्ध अर्थात संविधान के विरुद्ध है। स्वतंत्रता, समता, बंधुता और न्याय इन संविधान के तत्वों के आधार पर हम सभी भारतीयों को समानता के सूत्र में रहकर मानवीयता से जीवन यापन करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. कुसुम वियोगी,"धारा के विरुद्ध 'अक्षर पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रिब्युटर्स, दिल्ली, प्र.सं. सन 2023 ई. पृ.17
2. वही पृ.104
3. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर,"भारताचे संविधान' संपा. प्रदीप गायकवाड, दीक्षाभूमी संदेश, समता प्रकाशन, नागपुर, बारहवा.सं. सन 2008 ई. पृ.211
4. डॉ. कुसुम वियोगी,"धारा के विरुद्ध 'अक्षर पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रिब्युटर्स, दिल्ली, प्र.सं. सन 2023 ई. पृ.20
5. वही पृ. 94
6. डॉ. दिलीपकुमार कसबे, "सठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना' ए. बी. एस. पब्लिकेशन, वाराणसी, प्र. सं. सन 2015 ई. पृ. 149
7. डॉ. कुसुम वियोगी,"धारा के विरुद्ध 'अक्षर पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रिब्युटर्स, दिल्ली, प्र.सं. सन 2023 ई. पृ.22
8. डॉ. संतोष रायबोले,"सर्वहारा नारी-चेतना संजीव की कहानियों के विशेष संदर्भ में" संपा. प्रा. अजयकुमार कांबळे 'हिंदी साहित्य में नारी विमर्श"निर्मिति संवाद प्रॉ. प्रा. लि., कोल्हापुर , प्र.सं. सन 2016 ई. पृ.117
9. डॉ. कुसुम वियोगी,"धारा के विरुद्ध 'अक्षर पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रिब्युटर्स, दिल्ली, प्र.सं. सन 2023 ई. पृ.29
10. वही पृ.41
11. वही पृ.31
12. वही पृ.33

13. वही पृ.35
14. वही पृ.88
15. वही पृ.18
16. वही पृ.95
17. वही पृ.29
18. वही पृ.77